# डायबिटीज़ की कहानी डाक-टिकटों की जुबानी

राधिका श्रीवास्तव

आइये आज हम अपने जीवन में कुछ साल पीछे चलते हैं। बचपन के वो दिन जब हम तरह–तरह की चीजें इकठ्ठा करते थे। एक अजीब सा जुनून होता था–कन्चे, किताबें, तस्वीरें, तितली, चिड़ियों के पंख, फूल पत्ती अलग–अलग देश के सिक्के, डाकटिकट आदि न जाने कितने ही और शौंक होते थे। और फिर उनकी अदला बदली। सबसे ज्यादा लोक प्रिय होते थे डाक टिकट क्योंकि एक छोटा सा डाक टिकट केवल मूल्य नहीं दर्शाता वो उस देश की संस्कृति, कला, वेशभूषा, आदर्श, इतिहास आदि कितने ही पहलू पर रोशनी डालता है। बहुत कुछ कहता है। आज के इस SMS और e-mail के युग में शायद बच्चे इस अनोखे रोमांच से वंचित रह गए हैं। पत्र लाने ले जाने का काम कभी कबूतर करते थें फिर गुप्तचर, फिर बना डाक विभाग और पत्रों पर देश के राजा–रानी की मोहर लगने लगी और 01 मई 1840 में जारी हुआ पहला डाक टिकट।

आप सोचेंगें इन सब का मधुमेह से क्या? तो आइए खुद ही देखें क्या संबंध है मधुमेह एवं डाकटिकट के बीच–

किसी भी व्यक्ति, घटना, स्थान या अविष्कार के महत्व को रेखांकित करने के लिये विभिन्न देश समय–समय पर डाक टिकट जारी करते हैं। मधुमेह जैसे रोग के संबंध में भी बहुत से डाक टिकट जारी हुऐ हैं। आईये आज हम इनमें से कुछ की चर्चा करते हैं।

आर्टेअस (सन 130–200ई.) हिप्पोक्रेटिस के शिष्य थे। उन्होंने मधुमेह की बीमारी को समझा और उस जमाने में इसकी सही व सटीक व्याख्या की। आर्टैअस ने ही इस बीमारी को 'डायबिटीज' (Diabetes) का नाम दिया जिसका ग्रीक में मतलब होता है साईफन। उन्होंने अपनी किताब में लिखा कि इस बीमारी में शरीर का माँस घुल–घुल कर पेशाब में निकलता रहता है और मरीज कमजोर और दुबला होता जाता है। शरीर में पानी अंदर रुकता नहीं है साईफन की भाँति पेशाब से बाहर जाता रहता है।

उनके बताये लक्षण आज कोई 2000 साल बाद भी प्रासंगिक लगते हैं। उनके द्वारा दिया नाम डायबिटिज़ आज भी दुनिया भर में प्रचलित है। उन्ही के सम्मान में अफ्रीकी राष्ट्र ट्रॉंसकी ने 1990 में उनके चित्र व उनके द्वारा उल्लेखित डॉयबिटीज़ के लक्षणों के साथ एक डाक टिकट जारी किया।(देखें चित्र नंबर 1)

प्राचीन हिन्दू संस्कृति में मधुमेह का उल्लेख आर्टेअस से भी पुराना है। आयुर्वेद में बीमारी का जितना सटीक एवं संपूर्ण विवरण उस युग में किया गया था वह आश्चर्यजनक है। ईसा से सौ साल पहले आयुर्वेद के तीन प्रमुख चिकित्सक रहे चरक, सुश्रुत एवं वागभट्ट इन्होंने विभिन्न बीमारियों के बारे में पुस्तकें लिखी जिन्हें संहिता कहा जाता था। चरक संहिता में इस बीमारी का नाम मधुमेह यानि शहद की बरसात जैसा मीठा मूत्र एवं इक्सुमेह अर्थात गन्ने के रस सा मूत्र। इसके लक्षणों में बताया गया है कि शरीर कमजोर होता जाता है, फोड़े, फुंसी होते हैं। मुँह से बदबू आती है एवं मरीज बेहोश हो सकता है। उपचार के तरीके भी बताये गये हैं जिसमे कम भोजन कम वसा लेना, अधिक व्यायाम करना व मीठा न खाने पर जोर दिया गया है, साथ ही सावधान किया गया है कि मरीज को चोट न लगे।

भगवान धनवन्तरी को आयुर्वेद का देवता कहा जाता है। आयुर्वेद की पहचान भी भगवान धनवन्तरी को माना जाता है। आयुर्वेद के महत्व को रेखांकित करते हुए भगवान धनवन्तरी के चित्र के साथ नेपाल सरकार ने सन् 1977 में एक डाक टिकट जारी

चित्र क्र.–1

चित्र क्र.–2

चित्र क्र.–4

चित्र क्र.–3

चित्र क्र.–5

चित्र क्र.–6

चित्र क्र.–9

चित्र क्र.–7

चित्र क्र.–10

चित्र क्र.–8

किया।

जहाँ जूलजर, पऊलेस्कू आदि वैज्ञानिक जरा से के लिए चूक गए थे। वहीं बेंटिंग और बेस्ट के लिए यह सब सरल न था, मगर सही कार्यप्रणाली समझ एवं ज्ञान के साथ उत्साह, मेहनत किस्मत ने असंभव को संभव बनाया। साथ ही मेक्लिओड की पहचान एवं कोलिप की कुशलता ने भी काफी मदद की और आखिर कर इंसुलिन की खोज का ताज आया बेंटिग और बेस्ट के हिस्से। (देखें चित्र –2)

सन् 1921–1922 में बेन्टिंग और बेस्ट ने कनाडा में इन्सुलीन की खोज की। इस महान खोज ने आगे जाकर लाखों मधुमेह रोगियों की जान बचायी कनाडा सहित अनेक देशों ने बेन्टिंग बेस्ट ही नहीं उस कुतिया मारजोरी जिस पर बेन्टिंग एवं बेस्ट ने प्रयोग किये थे की फोटो वाले डाक टिकिट जारी किये।

कुवेत राज ने भी बेंटिग और बेस्ट को श्रद्धांजति के रूप में इंसुलिन के पच्चासवीं वर्षगाँठ के अवसर पर ये डाक टिकट जारी किया। (देखें चित्र–3)

हम सब जानते है कि इंसुलिन की खोज बेंटिग एवं बेस्ट ने की। मगर रोमानिया के लोगों का मानना है कि इंसुलिन की खोज रोमनिया के वैज्ञानिक ''निकोलस पउलेस्कु'' ने की मगर दुर्भाग्यवंश उन्हें पहचान न मिल सकी। पउलेस्कु ने मधुमेह एवं पेंक्रियास पर काफी परिक्षण किए तथा एक तत्व भी तैयार किया जिसे नाम दिया ''Pancreine '' जो मधुमेही कुत्ते को लगाते ही उसका रक्त शर्करा स्तर सामान्य करने में सक्षम था। साथ ही पेशाब में जाने वाली शुगर एवं किटोन को भी रोका जा सका। अगस्त 1921 में (यानी बेंटिग से पहले) उनका लेख भी छपा था मगर किसी ने महत्व नहीं दिया और उन्हें कोई पहचान नहीं मिली। (देखें चित्र 4–5)

Rosalyn Sussman yalow ने 1947 में परमाणु शास्त्र में तालीम प्राप्त कर रेडिएशन पर काम शुरू किया। 1950 में उन्होंने पता लगाया की वे मरीज जो पशु से प्राप्त इंसुलिन का इंजेक्शन लगा रहे है उनके शरीर में Antibodies बन रहें हैं। जबकी मान्या थी कि इतना सा इंसुलिन ऐसा नहीं कर सकता फिर 1956 में उन्होंने एक तकनीक शुरू की जिसे RIA के नाम से जाना गया। इसकी मदद से रक्त में घूम रहे सूक्ष्म से सूक्ष्म पेपटाईड रहे हारमोन की मात्रा के कण का पता लगाया जाता है। RIA के प्रयोग से हारमोन संबंधित रोगों के निदान एवं उपचार के लिए एक नई दिशा मिली। यही शुरूवात थी RIA से इन्सुलिन की जांच की जिसके लिए Yalow को 1977 में नोबल पुरूस्कार से सम्मानित किया गया। आज सारे लेब जो हारमोन की जाँच करते हैं RIA प्रक्रिया का ही उपयोग करते है।

सन्1995 Sierraleone से जारी ये डाक टिकिट। (देखें चित्र–6)

मधुमेही को डराने का एवं सलाह देने का काम सब करते हैं। आइये जाने कुछ आम बातें।

1. मधुमेह में गुर्दे खराब होने की, हृदय रोग एवं नेत्ररोग होने की संभावना बढ़ जाती हैं इसलिए इनसे जुड़े पहलू की जाँच साल में एक बार अवश्य करवाएँ। जैसे पेशाब में माइक्रो एलबोमिन, लिपिड़, प्रोफाईल, ECG, रेटिना की जांच आदि। इन्हीं अंगों की सुरक्षा की जानकारी देते ये डाक टिकिट सन् 1974 में Dominican Republic से जारी। (देखें चित्र–7,8)

2. मधुमेह से जुड़ी परेशानियाँ तो हैं मगर एक खुश खबरी ये भी है कि मधुमेही की सजगता व विषयों की जानकारी 60% तक खतरें को टाल सकती है

इसी जाग्ररूकता को बढ़ाने का संदेश देते डाकटिकिट सन् 2001 में USA से जारी किए गए। चित्र जो कहते हैं समझे अपनी बीमारी को। (देखें चित्र–9)

3. हम जानते हैं कि खतरा टालने के लिए जरूरी हैं विषय की जानकारी एवं आपके रक्त में शर्करा का स्तर। आपका काम आसान करने के लिए हैं। ग्लुकोमीटर। अब तो अनेकों प्रकार के ग्लुकोमीटर उपलब्ध हैं। 1970 के दशक में पहली बार लोगों तक पहुँचा–पहला ग्लुकोमीटर ये डाक टिकट जो St.Vincent से सन् 1989 में जारी हुआ। ग्लुकोमीटर के उपयोग को दर्श रहा हैं। (देखें चित्र–10)

तो देखा आपने इतने से डाकटिकटों ने कैसे समेटा हैं मधुमेह का इतिहास जो 3500 साल से भी ज्यादा पुराना है। ●●●

**–राधिका श्रीवास्तव**